Bhajan

08

इतना तो करना स्वामी जब प्राण तन से निकले

इतना तो करना स्वामी जब प्राण तन से निकले ।
गोविन्द नाम लेकर, फिर प्राण तन से निकले ॥

गंगा जी का तट हो, यमुना का बंसीबट हो,
मेरा सांवरा निकट हो, जब प्राण तन से निकले ॥
इतना तो करना स्वामी . . .

वृन्दावन का स्थल हो, मेरे मुख में तुलसि दल हो,
विष्णु चरण का जल हो, जब प्राण तन से निकले ॥
इतना तो करना स्वामी . . .

आना ज़रूर आना, राधे को साथ लाना,
मुरली की धुन सुनाना, जब प्राण तन से निकले ॥
इतना तो करना स्वामी . . .

ये नेक सी अरज है, मानो तो क्या हरज है,
कुछ आपका फरज है, जब प्राण तन से निकले ॥
इतना तो करना स्वामी . . .

राम मैं तो जब से शरण तेरी आया

राम मैं तो जब से शरण तेरी आया
आनन्द आनन्द आनन्द मैंने पाया

अन्धकार में भटक रहा था, सूझे न कोई किनारा
तूने मन में जोत जगा कर, दूर किया अन्धियारा
तू ही है एक सहारा, जीवन का सच पाया

हर दम मेरे पास रहा तू, फिर भी देख न पाया
जग बन्धन में ऐसा डूबा, खुद में रहा भरमाया
भटके हुए राही को, राह पे तूने लगाया

अनमोल था ये जीवन मेरा, यूँही व्यर्थ गंवाया
धन दौलत के पीछे भागा, पास न तेरे मैं आया
मैं अब तक था अंजाना, अब मन में तूही समाया

धुन -- राम मेरे राम सांचा है तेरा नाम

जरा आ शरण मेरे राम की

जरा आ शरण मेरे राम की,
मेरा राम करूणा-निधान है ,
मेरा राम करूणा-निधान है,
मेरा राम किरपा-निधान है ॥

पल पल तू उसका ध्यान कर,
उसके आगे फरियाद कर,
तेरे कष्ट सब कट जाऐंगे,
तेरे पाप सब धुल जाऐंगे,
मेरा राम करूणा-निधान है,
मेरा राम किरपा-निधान है ॥१॥

लिया आसरा जिस नाम का,
वो तो बन गया श्री राम का,
जिस नाम से पत्थर तरे,
तेरा तरना तो आसान है,
मेरा राम करूणा-निधान है,
मेरा राम किरपा-निधान है ॥२॥

लगी भीलनी को ये आस थी,
प्रभु कब आयेंगे ये प्यास थी,
झूठे बेर खाये राम ने,
ये तो जाने सारा जहान है,
मेरा राम करूणा-निधान है,
मेरा राम किरपा-निधान है ॥३॥

राम राम बोल मनवा

राम राम बोल मनवा, राम राम बोल।
राम ही तन मन तेरा, उससे नाता जोड़ ॥

राम ही के नाम से, दुख तेरे कटें।
अन्धकार दूर होवे, चिंतायें मिटें।
मीठी वाणी बोल ॥
राम राम बोल ...

जन्म तेरा ये यूहीं, व्यर्थ जायेगा।
भज प्रभु का नाम तेरे, काम आयेगा।
अमृत वाणी बोल ॥
राम राम बोल ...

क्रोध मोह लोभ छोड़, भज प्रभु का नाम।
राम नाम से ही तेरे, पूर्ण होंगे काम।
मन के द्वारे खोल ॥
राम राम बोल ...

बृज के नन्दलाला

बृज के नन्दलाला, राधा के साँवरिया,
सब दुख दूर हुऐ, जब तेरा नाम लिया ॥

मीरा पुकारे जब, गिरिधर गोपाला,
ढल गया अमृत में, विष का भरा प्याला,
कौन मिटाये उसे, जिसे तू राखे पिया ॥१॥
सब दुख दूर हुऐ . . .

जब तेरे गोकुल पे, आया दुख भारी,
एक इशारे पे, सब विपता टारी,
मुड़ गया गोवरधन, तूने जित मोड़ लिया ॥२॥
सब दुख दूर हुऐ . . .

नयनों में शाम बसे, मन में बनवारी,
सुध बिसराऐ गई, मुरली की धुन प्यारी,
मन के मधुबन में, रास रचाए रसिया ॥३॥
सब दुख दूर हुऐ . . .

मंजिल मंजिल क्यों भटके मन

मंजिल मंजिल क्यों भटके मन,
कोई नहीं यहाँ तेरा,
जिस पल को तू अपना समझा,
वो पल भी न तेरा ॥

जग बन्धन में क्यों उलझा तू,
कोई न आवे काम,
संगी साथी सब छूटेंगे,
अंत मिले परिणाम,
अपने मन में राम बसाले,
वो ही है तेरा सहारा, वो ही है तेरा सहारा ॥१॥

माटी की तेरी काया, माटी में मिल जानी,
अंत समय कुछ काम न आवे, कुछ तो समझ ओ प्राणी,
तेरे मन के अन्धियारे में, कर देगा वो उजियारा
वो ही है तेरा सहारा ॥२॥

बीती जाऐ सगरी उमरिया, सिमरन कर ले नाम,
संकट सब मिट जाऐंगे तेरे, किरपा करें श्री राम,
जो भी उसके द्वारे आया, उसको ही पार उतारा,
वो ही है एक सहारा ॥३॥

मेरे राम मेरे राम
सांचा है तेरा नाम

जब राम नाम गुण गावेगा रे

जब राम नाम गुण गावेगा,
तेरा जन्म सफल हो जावेगा रे ॥

मोह जाल में क्यों भरमाया,
ये सब है दो पल की छाया,
अंत समय कुछ काम न आऐ,
फिर पाछे पछताऐगा रे ॥१॥

राम किरण है राम उजाला,
राम ही सब कुछ देने वाला,
राम नाम से प्रीत बढ़ा ले,
काम ये नाम ही आवेगा रे ॥२॥

राम नाम को मन में बसा ले,
जीवन नईया वो ही सम्भाले,
सौंप दे सब कुछ उसके हाथों,
वो ही पार लगावेगा रे ॥३॥

अब सौंप दिया इस जीवन का

अब सौंप दिया इस जीवन का, सब भार तुम्हारे हाथों में,
है जीत तुम्हारे हाथों में, है हार तुम्हारे हाथों में ॥

मेरा निश्चय बस एक यही, एक बार तुम्हे पा जाऊँ मैं,
अर्पण कर दूँ फिर दुनिया का, सब भार तुम्हारे हाथों में ॥१॥

जो जग में रहूँ तो ऐसे रहूँ, जैसे जल में कमल का फूल रहे,
मेरे सब गुन दोष समर्पित हों, करतार तुम्हारे हाथों में ॥२॥

जब जब संसार का कैदी बनूँ, निष्काम भाव से कर्म करूँ,
फिर अंत समय में प्राण तजूँ, निराकार तुम्हारे हाथों में ॥३॥

मुझ में तुझ में बस भेद यही, मैं नर हूँ तुम नारायण हो,
मैं हूँ संसार के हाथों में संसार तुम्हारे हाथों में ॥४॥